कृति : श्रावक प्रतिकमण

कृतिकार : मुनि प्रज्ञासागर जी

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन, अहमदाबाद गुज

प्राप्ति स्थल : जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डॉ. शैलेष भाई ए. शाह 1/1 गोकुल अर्पाटमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद–380063

मूल्य : 3/– रूपये मात्र

प्रभु महावीर ने सत्य के साधकों के लिए, श्रमण और श्रावकों के लिए तीन ही सूत्र दिये हैं। प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग, अतीत के पापों के प्रक्षालन के लिए प्रभु ने प्रतिक्रमण नामक प्रथम सूत्र दिया। दूसरा सूत्र दिया अनागत के पापों से बचने के लिए प्रत्याख्यान का और आत्म निरीक्षण करने के लिए तीसरा सूत्र दिया कायोत्सर्ग यानि सामायिक का। ये तीनों ही सूत्र अपने–अपने स्थान पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं और इनमें भी पापों के बोझ को हल्का करने की सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाता है प्रतिक्रमण और यदि होना चाहते हो अपने पापों से मुक्त।

तो आइये, हम वमन करें अपने पापों का। तो आईये, हम विमोचन करें अपने कुकृत्यों का। तो आइये, हम स्वीकार करें अपने पापों को। क्योंकि पापों के वमन का नाम ही प्रतिक्रमण है। कुकृत्यों के विमोचन का नाम ही प्रतिक्रमण है। अपने पापों की स्वीकृति का नाम ही प्रतिक्रमण है और यदि वास्तव में कहा जाये तो स्वयं के प्रति किये जाने वाले आक्रमण का नाम ही प्रतिक्रमण है।

तो चलिये, हम करें स्वयं पर आक्रमण। पर ठहरो, आक्रमण करें, उसके पूर्व अपनी शक्ति के अनुसार आसन लगाकर एकाग्रचित हो, भगवान जिनेन्द्र की मूर्ति की तरह बैठ जाये। तत्पश्चात् अपने दोनों हाथों को जोड़कर भगवान जिनेन्द्र का प्रत्यक्ष व

परोक्ष रूप से दर्शन/ स्मरण करके प्रतिक्रमण करने का संकल्प करें और संकल्प करने के साथ ही कर दें स्वयं पर आक्रमण यानि प्रतिक्रमण का शुभारंभ।

मैं मानता हूॅ कि धन्यभागी हैं वे लोग जो अपने जीवन में प्रतिक्रमण का शुभारम्भ करते हैं। अपने दुष्कृत्यों का प्रायश्चित करते हैं तथा सबसे क्षमा मांगते हुए सबको हृदय से क्षमा करते हैं और सच है कि वे ही लोग मृत्यु से बच पाते हैं जो प्रायश्चित प्रतिक्रमण के सागर में डुबकिया लगाते हैं। मैं तो प्रभु से यही प्रार्थना करता हूॅ कि प्रभु आपको वो साहस दे जिससे आप सबको क्षमा कर सकें और सबसे क्षमा मांग सकें, और कर सकें स्वयं पर आक्रमण यानि प्रतिक्रमण।

....